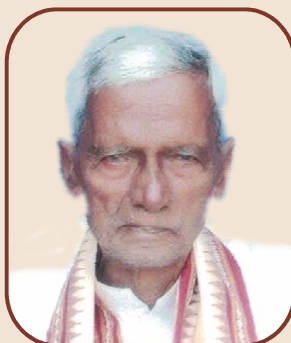


Padma Shri



SHRI BHAGABAT PADHAN

Shri Bhagabat Padhan is the Guru of 'Sabda Nrutya', one of the oldest dance form based on mythology from Odisha.

2. Born on 24th June, 1938, Shri Padhan after passing Class-VII got a Government job of Teacher in Education Department. But this job couldn't satisfy him because he was a true lover of art. So he left the job and joined the institution "Brajewari Nrutya Kala Sansad", a Government, registered Cultural Institution of Lokakala Grama (village) "Kumbhari" in Bargarh district in Odisha, established in 1850, as an artist. Later he became the "SABDA NRUTYA GURU" in 1974 and has been continuing till date. Since then he has created more than 600 artists and has established himself as "BHAGA MASTRE" across the region. As a Guru of SABDA NRUTYA" he had a number of disciples in his own district and also in other districts. People praised him for this dance form. He was highly admired by many Government/Private institutions for this. He was rewarded and awarded in many places and achieved silver/gold medals.

3. Many educationists, artists, Odishi dancers, Scholars and researchers visited his institution and were anxious to know what "SABDA NRUTYA" is. When they came to know the uniqueness of this mythological dance, they highly praised Guru Bhagabat Padhan. Besides many foreign artists/dancers from Italy, German, Japan, Srilanka, Thailand, America etc. also visited this institution and gave positive remarks on it. This dance form has spread in Odisha and also outside Odisha.

पदम श्री



श्री भागबत पधान

श्री भागबत पधान 'शब्द नृत्य' कला के गुरु हैं, जो ओडिशा में पौराणिक कथाओं पर आधारित प्राचीनतम नृत्य रूपों में से एक हैं।

2. श्री पधान का जन्म 24 जून, 1938 को हुआ। वह सातवीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद शिक्षा विभाग में शिक्षक बने। किन्तु इस सच्चे कला प्रेमी को इस कार्य से संतुष्टि नहीं मिली। इसलिए उन्होंने नौकरी छोड़ दी और ओडिशा के बरगढ़ जिले में 1850 में स्थापित लोककला ग्राम (गांव) "कुंभारी" में सरकार के पास पंजीकृत एक सांस्कृतिक संस्था "ब्रजेश्वरी नृत्य कला संसद" में एक कलाकार के रूप में शामिल हो गए। बाद में वे 1974 में "शब्द नृत्य गुरु" बने और अभी भी शब्द नृत्य गुरु हैं। तब से, उन्होंने 600 से अधिक कलाकारों को प्रशिक्षण प्रदान किया है और इस पूरे क्षेत्र में "भाग मास्टर" के रूप में जाने जाते हैं। शब्द नृत्य गुरु के रूप में उन्होंने अपने जिले और अन्य जिलों में भी अनेक शिष्य बनाए हैं। लोग इस नृत्य रूप के लिए उसकी प्रशंसा करते हैं। कई सरकारी / निजी संस्थानों ने भी उनकी प्रशंसा की है। उन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है और उनसे रजत / स्वर्ण पदक प्राप्त हुए हैं।

3. "शब्द नृत्य" के बारे में जानने को उत्सुक कई शिक्षाविदों, कलाकारों, ओडिशी नर्तकों, विद्वानों और शोधकर्ताओं ने उनकी संस्था का दौरा किया। जब उन्हें इस पौराणिक नृत्य की विशेषताओं का पता चला, तो उन्होंने गुरु भागवत पधान की भूरी-भूरी प्रशंसा की। इसके अलावा, इटली, जर्मनी, जापान, श्रीलंका, थाईलैंड, अमेरिका आदि देशों के कई विदेशी कलाकारों / नर्तकों ने भी इस संस्थान का दौरा किया और सकारात्मक विचार व्यक्त किए। यह नृत्य ओडिशा में और ओडिशा के बाहर भी लोकप्रिय हो गया है।